ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

वैश्विक जीवन–मूल्य और राम कथा

सारांश

आज आवश्कता है विद्यालयों में वयस्क विद्यार्थियों को पुस्तकीय शिक्षा के साथ सैन्य शिक्षा प्राप्त हो। आज इजरायल इन्हीं राष्ट्रीय मूल्यों को अपनाकर विश्व की सबसे श्रेष्ठतम सैन्य शक्ति के रूप में अपनी राष्ट्र सुरक्षा में अग्रणी हैं। इजरायल का प्रत्येक बच्चा सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करता है। तो यह एक बहुत बड़ा उदाहरण है रामकथा में जीवन मूल्यों का।

मुख्य शब्द : वैश्विक जीवन–मूल्य, रामकथा, मूल्य स्खलन, प्रजातांत्रिक व्यवस्था,राम की मर्यादा, वाल्मीकि रामायण,रामचरित मानस, प्रेरणादायी मूल्य, स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, रामायणसार पद्य।

शशिवल्लभ शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
अम्बाह पी.जी. कॉलेज,
अम्बाह, मुरैना, म.प्र.

प्रस्तावना

जिस देश के राष्ट्रीय मूल्य जितने समृद्ध होंगे वह देश अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उतना ही सामर्थ्यवान होगा। किसी भी देश की सम्प्रभुता और राजनैतिक सुदृणता उस देश के नागरिकों के राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों में निहित होती है। जिस देश की राष्ट्र नीति जितनी सैद्धांतिक होगी ,वह देश भी उतना ही मूल्य प्रधान होगा। परिस्थितियाँ मूल्यों को तोड़ने का मुख्य कारण बनती हैं, मनुष्य की सबसे बड़ी और मूलभूत आवश्यकता है भोजन । भूखा इंसान या तो दम तोड़ देगा या भूख मिटाने के लिए वह किसी भी हद को पार करने में तमाम कारणों परिणामो की परवाह किये बिना अंजाम देगा। सृष्टि के आरम्भ से ही दो घटनाएँ साथ–साथ घटी । एक सुख और दूसरा दुःख। आवश्यकता, अपेक्षा और अभाव दुःख का मुख्य कारण है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज सहकारिता का आधार है, तब मानव के द्वारा ही दुःख को दूर करने के लिए दया–करुणा जैसे मूल्यों ने जन्म लिया । ''मूल्यों की उत्पत्ति और उनका गठन सहसा या दैविक चमत्कार की भांति अचानक नहीं हुआ। मूल्यों का अविर्भाव और विकास समाज के साथ–साथ हुआ। जितना पुराना समाज है मूल्य भी उतने प्राचीन है'।'[1]

सद्‌वृत्ति मूल्य स्खलन को रोकने में महवपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जीवन मूल्यों के अनुशीलन में सभी धर्मों के सांस्कृतिक पक्ष को देखने से पता चलता है कि विश्व के सभी देशों के जीवन मूल्य शाश्वत और समानार्थी हैं। प्रायः सभी देशों का खानपान, रीतिरिवाज, परम्पराएँ रहन–सहन भाषाओं में भिन्नताएं हैं लेकिन मूल्यों में कोई भिन्नता नहीं । प्रेम एक मूल्य है जिसकी अनुभूति विश्व के कोने–कोने में महसूस की जा सकती है। मूल्य सार्वकालिक हैं, सार्वदेशिक हैं, सर्वमान्य हैं, बस प्रधानता का फर्क है। ईसाई धर्म में सेवा को प्रधान मूल्य माना गया, तो बौद्ध धर्म में करुणा की प्रधानता रही। इस्लाम में भी जकात आदि। हिन्दू सनातन धर्म में कोई एक मूल्य नहीं वल्कि सभी शाश्वत मूल्यों की प्राधनता है। परिस्थितियाँ मूल्यों के टूटने का कारण तो बनती हैं, लेकिन मूल्यों का टूटना मूल्यों का नष्ट होना नहीं हैं। किसी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के हमले से स्वयं को बचाने के लिए किया गया आक्रमण हिंसा नहीं है और नाहीं उसका सहिष्णुता जैसे मूल्य का नष्ट होना है वल्कि वहाँ राष्ट्रीय मूल्य है। ''विकृतियाँ कभी जीवन मूल्य नहीं बन सकती।''[2]

मूल्य का आशय किसी व्यक्ति की किसी वस्तु के प्रति आवश्यकता ओर उसकी इच्छा पूर्ति से है। मानव अस्तित्व से मूल्य का अस्तित्व है। मानवीय भावना और संवेदना मूल्य की जननी है। यह सर्वविदित है कि, किसी वस्तु का स्वतः अपना कोई मूल्य नही होता। मूल्य निर्धारण के केन्द्र में मानव है; इसलिए व्यक्ति की इच्छा, संतोष, असंतोष, सुखानुभूति आवश्यकता और उपयोगिता मूल्यों का निर्धारण करते हैं। प्रत्येक वस्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्यवान नहीं होती; क्यों कि उसके मूल में प्रत्येक व्यक्ति की अकांक्षाए अलग–अलग होती है। किसी व्यक्ति की किसी वस्तु को प्राप्त करने की लालसा; आवश्यकता और उपयोगिता ही उस वस्तु के मूल्य को निर्धारित करती हैं।

प्रश्न उत्पन्न होता कि 'मूल्यों' की जीवन में क्या उपयोगिता है? क्या उन्हें स्वीकार करना आवश्यक है? इस प्रश्न के समाधान में यह कहने का प्रयास किया जा सकता है,कि मूल्यों के बिना जीवन नहीं और जीवन के बिना मूल्यों का औचित्य नहीं। व्यक्ति मूल्यों को इसलिए अपनाता है ताकि उसकी जीवन–रुपी यात्रा सकुशल पूर्ण हो सके। प्राचीन–काल से ही मनुष्य की जिजीविशा और जिज्ञासा की भावना निरंतर जीवन के नवीन पथ खोलने के लिये प्रेरित करती रही है। व्यक्ति की उम्र के साथ–साथ मूल्यों की आवश्यकता और उपयोगिता भी परिवर्तित होती है। व्यक्ति अपनी जीवन–यात्रा में मूलतः दो तरह के रिश्तो को साथ लेकर चलता हैं। प्रथम वे रिश्ते या संबंध जिन्हें वह स्वंय बनाता है, जैसे–मित्र, प्रेमी, प्रेमिका, पति, पत्नी तथा अन्य। द्वितीय वे रिश्ते जो पैदा होते ही बन जाते हैं और उम्र के साथ–साथ रिश्तों का एक लम्बा जाल बन जाता है। पारिवारिक रिश्तों के अतिरिक्त सामाजिक स्तर पर अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए वह समाज, प्रदेश, देश, विदेश से भी जुड़ने लगता है। इन सभी रिश्तों और सम्बंधो से सामंजस्य बनाये रखने के लिए उसे मूल्यों की आवश्यकता और उपयोगिता होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कई लोगों से कई तरह की अपेक्षाएँ होती है। उन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये सहयोग जैसे मूल्य को नकारा नहीं जा सकता। सहयोग वह मूल्य है, जो जीवन–यात्रा के हर मोड़ पर जिजीविशा की माँग है। इस सम्बंध में निम्न कथन सटीक बैठता है– "जहाँ व्यक्ति को अपने विकास के लिए समाज के सहयोग की आवश्यकता होती है, वहाँ समाज को व्यक्ति–व्यक्ति के बीच पनपने वाले सामाजिक सम्बंधो की। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना तक नही की जा सकती।"[3]

मूल्यों का विश्लेषण करने पर जो बात सामने आती है वह है धर्म। धर्म ही वह मूल्य है जो सभी मूल्यों को सहेज कर रखता है। जो इंसान जितना धार्मिक होगा वह उतना ही मूल्य प्रधान होगा। भारतीय दर्शन और वैदिक साहित्य में भी धर्म को धारण करने के अर्थ में कहा गया है। महाभारत में धर्म से ही अर्थ और काम की सिद्धि कही गयी है। पाश्चात्य दार्शनिक कांट ने धर्म को नैतिकता की संज्ञा दी है। फिश्ट ने धर्म को ज्ञान का पर्याय माना है। भारतीय दार्शनिक डॉक्टर राधाकृष्णन ने धर्म को कोरे विश्वास के रूप में न लेकर सच्चरित्र के रूप में अपनाते हैं। इस प्रकार धर्म वह है जो हम सबको एक सम्पूर्ण विश्व को धारण करता है। विश्व मे जितने भी देश हैं उन सभी देशों के नागरिकों के जीवन मूल्य हैं। जीवन मूल्यों के अभाव में मनावता जीवित रह नहीं सकती क्यों कि मानवता मूल्यों की आधार शिला है।

रामकथा का महत्व और जीवन मूल्य

पूरे विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहाँ राम की महिमा और मर्यादा के उदाहरण बात–बात पर दिए जाते हैं, इसलिए नहीं कि वे राजा के पुत्र थे या उन्हें भगवान मान लिया गया वल्कि इसलिए कि उन्होंने कभी लोक की मर्यादा का उलंघन नहीं किया। विषम से विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने मूल्यों को नहीं तोड़ा। मूल्यों के सम्बंध में जो विभिन्न विद्वानों के शोध मिलते हैं उनमें देखा जा सकता है कि परिस्थितियाँ मूल्य स्खलन का कारण बनती हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर सर्वाधिक विमर्श इस बात पर हो रहा है कि सभी देश लोकतंत्र की मजबूती पर बल दें। मजबूत लोकतंत्र ही राष्ट्र के विकास में सहायक हैं क्यों कि मजबूत लोकतंत्र तभी सम्भव है जब बहुमत प्राप्त नेता सत्ता लोलुप न होकर प्रजा की भलाई में भरोसा करता हो। इस तरह की प्रजातांत्रिक व्यवस्था वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ ने अपनी सभा में यह प्रस्ताव रखा कि मैं वृद्ध हो गया हूँ और अब मुझे राम को राज्य संभालने का दायित्व सौंपना चाहिए क्यों कि वे अगणित गुणों से सम्पन्न हैं। इसके लिए सभी मंत्री, पंच और प्रजा अनुमोदन करे। राजा दशरथ के इस विचार से सभी को सूचना देकर आमंत्रण भेजा गया और सभा आयोजित की गई जिसमें सभी ने राम के गुणों की प्रशंसा कर राज्याभिषेक का अनुमोदन किया। तो यहाँ इस बात की पुष्टि होती है कि राजतंत्र में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के मूल्य कितने सुद्रण थे यह मूल्य रामकथा से सीखने को मिलते हैं।

अनुरूपःसवोनाथोलक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणाग्रजः।
त्रैलोक्यमपिनाथेनयेनस्यान्नाथवत्तरम् ।।
अनेन श्रेयसासद्यः संयोक्ष्येहमिमांमहीम् ।
गतेक्लेशोभविष्यामिसुतेतस्मिन्निवेश्यवै।।
यदिदं मे नुरूपार्थे मया साधु सुमंत्रितम्।
भवन्तो मे नुमन्यतां कथं वा करवाण्यहम्।। [4]

और श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा रचित वाल्मीकि रामायणसार पद्य के अयोध्या कांड के द्वितीय सर्ग में भी यही स्पष्ट है–

हो गया हूँ वृद्ध मैं अधिक काम से श्रांत
राघव को युवराज कर होऊं शांत विश्रान्त
मंत्री होकर एक मत बोले हे भूपाल
राघव राजा मानकर होगा देश निहाल
सभा बुलाते हैं अभी रचते हैं दरवार
गणनायक प्रतिनधि मिल करें राम स्वीकार
है धर्म धुरीण धृति धर धर्मधारी धीर जो
सर्व गुण गण युक्त हैं जो बने राजा राम सो
पंच मत के मेल से जो काम होवें हों भले
पंच में परमेश रहता लोक युक्ति यही चले
तत्काल किया अनुमोदन सबने चहुँ ओर से
मेघनाद को सुनते जैसे षड्ज निसरे मोर से
बहुत अच्छा कहा सभी ने घोष जय करताल की
सभा सिंधु में अति उछली हर्ष से उस काल की।। [5]

उक्त पंक्तियों में लोकतांत्रिक व्यवस्था की जो मिसाल रामकथा में देखने को मिलती है वो भारत में वैश्विक मूल्यों की व्याख्या है।

यही मूल्य हमें तुलसी कृत रामचरित मानस के अयोध्या कांड में दिखाई देते हैं राम के युवराज की घोषणा होने के तत्पश्चात कैकयी द्वारा रचित षडयंत्र से राम को बनवास मिलता है। राम, पिता की आज्ञा को सहर्ष स्वीकार करते बन गमन करते हैं लेकिन जब भरत को सूचना मिलती है तो बड़े भाई राम को लौटकर चलने को कहते हैं किंतु राम, पिता की आज्ञा को धर्म की रक्षा मानते हैं, तब भरत सन्यासी जीवन जीकर प्रजा की भलाई

के लिए राम की चरण पादुकाओं को शुभ मुहुर्त में राजगद्दी पर विराजित करते हैं–

सुनि सिख पाइ असीस बड़ि, गनक बोलि दिनु साधि
सिंघासन प्रभु पादुका, बैठारे निरुपाधि [6]

और प्रतिदिन राम की चरण पादुकाओं से स्वीकृति लेकर राजा स्वीकार कर चौदह वर्ष तक राजपाठ संभालते हैं–

नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदयँ समाति
मागि मागि आयसु करत, राज काज बहु भाँति [7]

यहाँ यह बात स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि इतिहास साक्षी है कि सत्ता के लिए बड़े–बड़े राजघराने काल के गाल में समा गये। भाई– भाई, पिता पुत्र एक दूसरे के हत्यारे हो गये। विश्व युद्द हो गए। आज हमारे सामने हाल का ही उदाहरण है कि चीन डोकलाम में व दूसरे देश की सीमाओं में एक–एक इंच जगह पर कुटिल नीति व सैन्य शक्ति का प्रयोग करता है वहीं रामकथा में भाई–भाई का प्रेम और त्याग आज भी विश्व के लिए प्रेरणादायी मूल्य हैं।

आज बहुत से देश आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहे हैं। यह समस्या किसी एक देश की नहीं बल्कि वैश्विक समस्या है। हजारों आम नागरिक, बच्चे महिलाएँ और सैनिक आतंकवादी हमले का शिकार हो रहे हैं। सेना के रात–दिन सजग होने के बाद भी आतंकवादी घटनाएँ हमें आये दिन सुनने को मिलती हैं। राम कथा में इस समस्या का समाधान हमें राष्ट्रीय मूल्यों के माध्यम से मिलता है। तुलसीदास कृत रामचरित मानस में एक चौपाई आती है–

गुरु गृह पढ़न गए रघुराई
अल्प काल विद्या सब पाई ।। [8]

पूर्व युगों में आम नागरिकों और राजघरानों के बच्चे गुरुकुलों में विद्याध्ययन करने जाते थे, जहाँ उन्हें शास्त्र के साथ अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा प्रयोगात्मक रूप से दी जाती थी। गुरू वशिष्ठ राम और उनके भाइयों को शिक्षा देते हैं। कम समय में बहुत सा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं जिसमें धर्म नीति राजनीति,वेद पुराण शास्त्र और सबसे महत्वपूर्ण शस्त्र विद्या। आतंकवदियों की समस्या अनादिकाल से रही है। उस युग में राक्षसों का आतंक था। राक्षस ऋषियों पर अत्याचार करते थे। इस आतंक से बचने और आतंकवादियों को मारने के लिए ऋषि विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को राजा दशरथ से माँग कर ले जाते हैं क्यों कि वो जानते हैं कि राम की क्षमताएं कितनी हैं

असुर समूह सतावहिं मोही ।
मैं जाचन आयउँ नृप तोही
अनुज समेत देहु रघुनाथा ।
निसिचर बध मैं होब सनाथा।। [9]

राम और लक्ष्मण को गुरुकृल में मिली अस्त्र–शस्त्र शिक्षा के बल से ही मुनियों पर आतंक कर रहे दोनों भाई आंतकी राक्षसों का वध कर देते हैं–

प्रात कहा मुनि सन रधुराई ।
निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई
होम करन लागे मुनि झारी ।
आपु रहे मख कीं रखवारी
सुनि मारीच निसाचर क्रोही ।
लै सहाय धावा मुनि द्रोही
बिनु फर बान राम तेहि मारा।
सत जोजन गा सागर पारा
पावक सर सुबाहु पुनि मारा ।
अनुज निसाचर कटुक सँघारा
मारि असुर द्विज निर्भय कारी।
अस्तुति करहिं देव मुनि झारी [10]

ये क्षमताएँ उन्हे विद्याध्ययन के दौरान प्राप्त हुईं। वर्तमान युग में आज विद्यालयों में मात्र पुस्तकीय शिक्षा दी जारही है जिसका उद्देश्य मात्र रोजगार प्राप्त करने से अधिक कुछ नहीं है। राष्ट्रीय मूल्य पुस्तकों में तो मिलते हैं लेकिन आज व्यवहार में नहीं। एक बच्चे के लिए राष्ट्रीय मूल्य क्या होते हैं उसे नहीं पता। आज आवश्कता है विद्यालयों में वयस्क विद्यार्थियों को पुस्तकीय शिक्षा के साथ सैन्य शिक्षा प्राप्त हो। आज इजरायल इन्हीं राष्ट्रीय मूल्यों को अपनाकर विश्व की सबसे श्रेष्ठतम सैन्य शक्ति के रूप में अपनी राष्ट्र सुरक्षा में अग्रणी हैं। इजरायल का प्रत्येक बच्चा सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करता है। तो यह एक बहुत बड़ा उदाहरण है रामकथा में जीवन मूल्यों का।

उद्देश्य

विश्व के समस्त देशों की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नीति में रामकथा में निहित मूल्यों की स्थापना।

निष्कर्ष

आशा, अपेक्षा और महत्वाकाँक्षा मानव मन की स्वाभाविकता है, जिनसे प्रभावित होकर प्रत्येक व्यक्ति अपना आत्मिक और भौतिक विकास करना चाहता है, किंतु विकास की प्रक्रिया सरल नहीं होती और इंसान कम समय और कम परिश्रम में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ बनाने की प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ में आगे निकला चाहता है। व्यक्ति जब अपनी क्षमताओं के बल पर ऊँचाइयाँ छूता है, तब वह सकारात्मक समाज के लिए प्रेरणात्मक मूल्य के रूप में एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण करता है किंतु दूसरी और कुंठित और असमाजिक लोग सामने वाले को गिराने और स्वयं को सर्वोच्च बनाने के लिए अनैतिक साधनों का प्रयोग करते है, तब समाज टूटता है। टूटा हुआ समाज कभी विकसित राष्ट्र नहीं बनता। इतिहास गवाह है कि सत्ता की भूख समाज को कैसे खा जाती है। राजनीति में हम सदियों से देख रहे हैं कि किस तरह सत्ता के लिए मूल्यों का विखराव हुआ है। अनैतिक तरीकों से महत्वाकाँक्षाओं की पूर्ति समाजिक, धार्मिक, सांस्कृति और आर्थिक मूल्यों को तोड देती हैं। एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण में ही एक विकासित राष्ट्र की संभावनाएँ हैं। स्वस्थ्य समाज के निर्माण के लिए आज रामकथा विश्व की मानव जाति के लिए वह औषधि है जिसमें सभी रोगों को शमन करने की क्षमता विद्यमान है। रामकथाएँ जीवन–मूल्यों वे गाथाएँ हैं जिनमें पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक जीवन–मूल्यों के रहस्य छिपे हैं। कवियों और साहित्यकारों ने राम को मर्यादा के रूप में मानव हितों के लिए प्रस्तुत किया। आज भारत में ही नहीं विश्व के अधिकांश देशों में रामकथाओं को पढ़ा और सुना जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास:मूल्य संक्रमण, डॉ. हेमेंद्र पानेरी, पृष्ठ 06*
2. *स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास:मूल्य संक्रमण, डॉ. हेमेंद्र पानेरी, पृष्ठ 29*
3. *समाज शास्त्र , प्रो. एम.एल.गुप्ता पृष्ठ क्र. 52*
4. *वाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड श्लोक 13,14,15*
5. *वाल्मीकि रामायणसार पद्य के अयोध्या कांड के द्वितीय सर्ग, श्री स्वामी सत्यानन्द जी*
6. *रामचरित मानस अयोध्या काण्ड, तुलसीदास*
7. *रामचरित मानस अयोध्या काण्ड, तुलसीदास*
8. *रामचरित मानस बाल काण्ड, तुलसीदास*
9. *रामचरित मानस बाल काण्ड, तुलसीदास*
10. *रामचरित मानस बाल काण्ड, तुलसीदास*